राष्ट्रीय एकता संदर्भ मे भारतीय संगीत की भूमिका

प्रा.डॉ.सारिका विवेक श्रावणे
संगीत विभाग, स्व. सी.एम.कढी
कला महाविद्यालय अचलपूर कॅम्प ,
जिला-अमरावती ,
sarikashrawane@rediffmail.com

सारांश -

राष्ट्रीय एक व्यक्तिशः भावना है जो अंतर्मन मे कही संबंधित होती है और एकता का सामान्य अर्थ है कि सभी के साथ मनोवैज्ञानिक एवं नैतिक आधार पर, बिना किसी भेदभाव के समान व्यवहार । आत: सामाजिक , आर्थिक ,धार्मिक राजनैतिक, सांस्कृतिक भिन्नताओं के बाद भी एक दुसरे के साथ जोडना अर्थात 'राष्ट्रीय एकता' और निसंदेह संगीत मे व्यक्ती से व्यक्ती जोडणे की भावाभिव्यक्ति है । प्राचीन काल से लेकर आज तक राष्ट्रीय एकीकरण मेंं संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । इसमे भक्ति आंदोलन , देशभक्त क्रांतिकारीओं में कवित्व एवम संगीत की एक अलौकिक शक्ती , गुरु-शिष्य परंपरा ,कलाप्रेमी राजाओं का काल तथा समूह गायन, विद्यालयीन संगीत शिक्षा पद्धती तक संगीत के माध्यम से राष्ट्रीय एकीकरण की प्राप्ति होती है । आदी महत्त्वपूर्ण विवेचन प्रस्तुत शोधनिबंध मे करने का प्रयास किया है ।

उद्देश -

प्राचीन काल मे सा संतो का कोई पारस्परिक भेद नही था । धर्म ,जाती ,क्षेत्र ,संस्कृती भिन्न होते हुए भी संगीत की एकही भाषा है जो व्यक्ती को व्यक्ती के निकट लाती है ।मध्ययुग मे भी ऐसा चित्र दिखता है ,आज कि पिढी में भी एकीकरण की अभिवृद्धी हो , दुसरी महत्वपूर्ण बात यहभी है कि , हमारे भारत देश के लिए अनेक विरोंने अपना बलिदान दिया है संगीत माध्यम से उनका सदैव स्मरण रहे तथा वर्तमान करोना जनित कठीण परिस्थितीयोंमेभी संपूर्ण राष्ट्र का मनोबल बढाने मे भी संगीत एक सशक्त माध्यम बने ।

संशोधन पद्धती -

संगीत आदीकालीन कला है । समाज अस्तित्व सेही संगीत का भी अस्तित्व है जिसका राष्ट्रीय एकता मे महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है । इस संदर्भ में प्राचीन तथा आधुनिक ग्रंथो का अध्ययन , विद्वानों के मत , अन्य विश्वविद्यालयो में हुए संशोधन कार्य अर्थात शोधप्रबंध , लघुशोधप्रबंध तथा दृकश्राव्य माध्यम से प्राप्त जानकारी प्रस्तुत शोधनिबंध मे आधार रही है ।

परिकल्पना -

१) राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने मे संगीत की महत्त्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट होगी और इस दिशा मे संशोधन करने की प्रेरणा मिलेगी ।

२) लोगों को एकसूत्र मे बांधने के साथही संगीत से मन को धैर्य एवं खूशी प्रदान होगी ।

३) प्रस्तुत विषय संदर्भ मे युवापिढी को राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत होकर प्राचीन मध्ययुगीन एवं वर्तमानकालीन संगीत का महत्व स्पष्ट होगा ।

४)वर्तमानकालीन कोरोनाजनित कठीण परिस्थितीओंमे राष्ट्रीय एकात्मता की अत्यंत आवश्यक्ता है , जहा इस समय सम्पूर्ण विश्व महामारीसे लढ रहा है , संगीत का अपना एक विश्व है जहा धर्म , जाती , मजहब के अवरोध भी बह जाते है तथा इस संदर्भ मे सामाजिक एकता की प्रेरणा मिलेगी ।

व्याप्ती और सीमाए -

संगीत एकता का बहुत बडा आयाम है । प्राचीन , मध्ययुगीन , वर्तमान कालमे राष्ट्रीय एकता संदर्भ मे संगीत की भूमिका स्पष्ट करते समय इसमे प्राचीन वेदकालीन संगीत मे भक्तीआंदोलन , मध्ययुग मे मुस्लिम आक्रमण के बाद देशभक्तो के बलिदान का महत्त्व स्पष्ट करने में संगीत का योगदान तथा महाविद्यालयीन संगीत शक्षा मे संगीत द्वारा राष्ट्रीय एकता , आदी महत्त्वपूर्ण घटकों का शब्दमर्यादा के कारण संक्षिप्त अध्ययन होगा ।

*** साहित्य की समीक्षा -**

हमारे अभिजात भारतीय संगीत से निश्चित ही मानव - धरम , परस्पर प्रेम, कर्तव्यपरायणता , प्रकृती प्रेम , राष्ट्रचेतना के दीप मानव हृदय मे निरंतर प्रज्वलित रहते हैं प्रस्तुत संशोधन साहित्य की समीक्षा करते समय

१) संगीत भाषा एवं राष्ट्रीय एकता : एक अध्ययन , शोधप्रबंध , सुषमा , कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र

२) राष्ट्रीय एकता के संदर्भ मे भारतीय लोकसंगीत की भूमिका , शोधप्रबंध ,उषा मालिक ,कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र

३) उत्तर भारत की राष्ट्रीय एकता मे भक्तिसंगित का योगदान , लघुशोध प्रबंध , कमलेश शर्मा , दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

४) राष्ट्र मे एकता बनाए रखने मे संगीत का योगदान, लघुशोध प्रबंध , सरिता ,महर्षी दयानंद विश्वविद्यालय ,रोहतक आदी विषयोंपर अभ्यासपूर्ण संशोधन मिलता है तथा राष्ट्रीय एकात्मता समय की जरूरत है जो की संगीत कला के योगदान संदर्भ मे प्रस्तुत शोधनिबंध द्वारा अनेक तथ्यों का अध्ययन करने का मेरा प्रयास है ।

मुख्य सार -

प्राचीन युग मे संगीतात्मक आंदोलन का प्रारंभ -भक्ति आंदोलन - संत संगीत परंपरा - मध्ययुग - आक्रमण - स्वातंत्र्योत्तर काल - क्रांतिकारियों की रचना - देशप्रेम - समूहगान - कर्तव्यभावना - वर्तमान महाविद्यालयीन संगीत शिक्षा पद्धती - राष्ट्रीय एकता

प्रस्तावना -

प्राचीन काल मे समाज में अथवा राष्ट्र मे अनीती , अनाचार ,अधर्म बढने लगे तो एक आध्यात्मिक , धार्मिक अथवा भक्ति आंदोलन की आवश्यकता थी , उसी प्रकार जब समाज परतंत्र अवस्था मे जकडा तब उसने अपनी स्वतंत्रता को प्राप्त करने हेतु राष्ट्रचेतना आंदोलन चलाये और तब इस आंदोलन को सशक्त बनाने का माध्यम संगीत ही था । भारतीय संगीत के विविध आयाम जैसे गुरु-शिष्यपरंपरा, क्रांतिकारियोंकीरचना, देशभक्तीपरगीत, समूहगान ,महाविद्यालयीन संगीत शिक्षा पद्धती आदी महत्त्वपूर्ण घटकों का राष्ट्रीय

एकता मे निसंदेह महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।प्राचीन काल से लेकर आज तक समाज मे एकीकरण के माध्यम संगीत ही हैं । अनेक भिन्नताओंके पश्चात भारतीय व्यक्ती को एक दुसरे के साथ जोडना अर्थात 'राष्ट्रीय एकता' । एवं सकारात्मक रूप से एकीकरण के लिए व्यापक होना , विभाजनकारी शक्तियों को समाप्त करना संगीत की शक्ती है । निश्चिती संगीत व्यक्ती से व्यक्ती को जोडणे की भावाभिव्यक्ति हैं । संगीत ही मनुष्यमात्र मे स्वाभाविक तथा प्राकृतिक संवेगो को प्रस्फूटीत करता है ।

विषय की ओर -

हिंदी साहित्य जगत मे विख्यात 'बृहद -हिंदी-कोश' मे राष्ट्र शब्द का अर्थ देश , राज्य और जाती किया गया है तथा 'मानक - हिंदी - कोश' मे राज्य , देश , किसी निश्चित और विशिष्ट क्षेत्र मे रहने वाले लोग जिनकी एक भाषा ,एक से रितिरिवाज तथा एक विचारधारा होती है तथा किसी एक शासन मे रहने वाले सब लोगों का समूह ।

संगीत रत्नाकर के अनुसार संगीत अर्थात , संगीत एक अन्विती है जिसमे गीत , वादय तथा नृत्य तीनो का समावेश है । संगीत शब्द मे व्यक्तिगत तथा समूहगत दोनो विधियों की अभीव्यंजना स्पष्ट है , इसीकारण व्यक्तिगत गीत ,वादन, नर्तन के साथ समूहगान , समूहवादन तथा समूहनर्तन का समावेश इसके अंतर्गत होता है , दोनो घटको' मे समूह महत्वपूर्ण है , जो व्यक्ती को व्यक्ती से जोडने का कार्य करता है ।

प्राचीन युग मे भक्ति आंदोलन का अध्ययन करते समय ध्यान मे आता है कि हमारे प्राचीन वेदो मे भी राष्ट्रीय चेतना भाव रहता था , उसपश्चात भारत की परंपरा मे सभी संतो और संगीतज्ञो मे भी भक्ति द्वारा हिंदू मुस्लिम एकता बनाई दिखाई देती है । साधू संतो का कोई पारस्परिक भेद नही था । धर्म ,जाती ,क्षेत्र ,संस्कृती इससे परे संगीत की भूमिका दिखाई देती है । भिन्न भाषाओं के लोकगीत , कबीर वाणी आदी इसके प्रमाण है जो आजभी प्रचलित है । व्यक्ति को व्यक्ति के निकट लाने के लिए प्राचीन संगीत मे गुरु-शिष्य परंपरा प्रधानतासे दिखाई देती है ,गुरु मुस्लिम और शिष्य हिन्दू ऐसे अनेक उदाहरण मिलते है । इस पश्चात इस प्रकार के संगीतात्मक आंदोलन का प्रारंभ अनुमानतया कविवर्य गुरु रवींद्रनाथजी टागोर से हुआ ऐसा माना जाता है ,क्योंकि वे भारतीयता की भावना से भरे हुए परंतु पाश्चात्य परिवेश से परिचित एक संगीत प्रेमी कलागुरू थे । जीन्होंने अपने स्वरों , शब्दो के माध्यम से अपनी भावनाओं को देशभर मे प्रसारित किया । साथही सुभाष चंद्र बोस , सरोजिनी नायडू ,महात्मा गांधीजी , लोकमान्य तिलक , आदी देशप्रेमी स्वयम् संगीतज्ञ थे ऐसा मै नही सकती परंतु संगीतात्मक देशभक्ती आंदोलन को सफल बनाने के लिए अपने साथ संगीतज्ञोंको जोड देते थे । तथा गणेशोत्सव शिवोउत्सव जैसे सार्वजनिक उत्सव की शुरूवात की , जीनसे हम सब परिचित है ,उनमें राष्ट्रीय कीर्तन आदी द्वारा राष्ट्रचेतना को जागृत करते थे ।

मध्ययुग की बात करे तो युद्धक्षेत्र मे संगीत एक शक्ती ,उत्साह बनकर सैनिकों को प्रेरित करते हुए दिखाई देती है । छत्रपती शिवाजी महाराज के कर्तव्य के प्रति सदैव तल्लीन रखने मे कवी भूषण के संगीत की भूमिका को प्रत्येक भारतवासी भली प्रकार जानता था ।

इस पश्चात प्रसिद्ध कवी इक्बाल की ,

'मजहब नही सिखाता आपस मे बैर रखना
हिंदी है हम , वतन है , हिन्दोस्ताँ हमारा' ।

इस गीत को आज भी कौन भूल सकता है , जो एकीकरण की भावना की परीपुष्टी करता प्रतीत होता है । संगीत माध्यम से राष्ट्रीय एकता की मुल भावना का संदेश जनमन को प्रेरित करता है । अनेक वीरोंं ने संगीत एवं राष्ट्रीय एकता बनाये रखने मे अपना जीवन लगा दिया और जीवन के प्रत्येक पैलू को संगीत से जोडने का प्रयास किया । निजामुद्दीन चिश्ती ने हिंदू त्यौंहारों को अपनाया उसी प्रकार हिंदू गायको को भी आश्रय दिया ऐसे अनेक उदाहरण इतिहास साक्षी है । राष्ट्रीय आंदोलन के समय पर गाये जाने वाले गीतों की इन पुस्तकाओंको सरकार के द्वारा प्रतिबंधित किया गया था उनकी जानकारी पुराने सरकारी रिकॉर्ड मे उपलब्ध है । इस प्रकार हिंदी गीतों की संख्या तत्कालीन सरकारी रिकार्ड के अनुसार २६४ है , वैसेही अन्य भाषाओं मे भी गीत पुस्तिकाए है । सरकार द्वारा जब्दशुदा गीतोंं मे सर्वाधिक लोकप्रिय और उल्लेखनीय गीता था । १८७५ मे सुप्रसिद्ध बंगला लेखक श्री.बकिमचंद्र चॅटर्जी इन्होने लिखा हुआ वंदे मातरम , देश के हर कोने मे बडे उत्साहसे गाते थे,राष्ट्रीय आंदोलन में वंदे मातरम की लोकप्रियता थी । काकोरी कांड के अमर शहीद पंडित रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा लिखा हुआ गीत क्रांतिकारीयों मे सर्वाधिक लोकप्रियता था ।

' सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ,
देखना है जोर कितना बाजुए कातील मे है ,
अब न अगले वलवले है
और न अरमानोंं की भीड
सिर्फ मीट जाने की हसरत
एक दिले बिस्मिल मे है ।'

वैसेही शहीद भगत सिंह का --

'सुख न जाये कही पोधा यह आजादी का ,
खून से अपने हम इसीलिए तर रखते है ,
खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते है ।'

यह गीत भी लोगोंं की जुबान पर था , आज भी है । देश के सभी धर्म और जातीयों से उपर समझने की यह भावना विशेष रूप से थी ।

स्वातंत्र्योत्तर काल मे भी राष्ट्रीय एकता मे संगीत की भूमिका कम नही हुई । अनेक महान गीतकार , संगीतकारोंने देश प्रेम सदैव जागृत रखने मे कोई कसर नही छोडी ।

' ए मेरे वतन के लोगो '...आज भी जनमानस को कर्तव्य के प्रति सजग रखती है ।

'कोई सिख , कोई जात मराठा
कोई गुरखा ,कोई मद्रासी ...

अनेक धर्म ,जाती, क्षेत्र विभिन्न होते हुए भी एकता की भावना को ही महत्त्व देते है इसका उत्तम उदाहरण आज भी देखने को मिलता है ।१५ मे २०२१ के दिन सोनी टीव्ही पर रात ९.३० बजे इंडियन आयडल सांगीतिक कार्यक्रम मेंं आशिष नामक एक स्पर्धक ने रोजा रखा तथा अन्य सभी ने भी एक दूसरे का साथ दिया । यह राष्ट्रीय एकता की भावना ही तो है । संगीत के मंच पर हिंदू-मुस्लीम एक साथ अपनी कलाओंका सादरीकरण करते है । उस्ताद बिस्मिल्ला खान की शहनाई आज भी हिंदू कें शादी की शान है इससे हम भली भाती परिचित है । प्रकृती का सारा ओर- छोर विविध सूर स्वर लहरियोंं का संमोहन है । वर्तमान शास्त्रीय संगीत , आज जो महाविद्यालयों मे पनप रहा है , यह राष्ट्रीय एकता का सर्वाधिक उत्तम उदाहरण है । राष्ट्रप्रेम जागृत करने के लिए समूह रूप मे गाये जाने वाले जोशपूर्ण शब्द से भरे उत्साहपूर्ण गीत समूहगान के रूप मे प्रचलित हुये । विद्यालयीन सामूहिक शिक्षा मे अनेक धर्म , जाती के विद्यार्थी एक समूह मे जब समूहगान करते है तो निश्चित ही राष्ट्रप्रेम जागृत होता है तथा भाईचारा बढता है । पहले भी ऐसे समूहगान से राष्ट्रचेतना आंदोलन सशक्त हुए ।

आज अनेक नैसर्गिक आपत्ती से बचने के लिए तथा अपना धैर्य , आत्मबल बढाने के लिए संगीत की अत्यंत आवश्यकता है आज के संघर्षमय जीवन मे एकता की प्रेरणा देने वाले संगीत जैसे तत्व की बहुत आवश्यकता है ।

निष्कर्ष -

` प्राचीन काल से आज तक नैसर्गिक एवं मानवनिर्मित अनेक आपत्तीयां आई है , जिसमे संगीत कला का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है । विर शहीदोंा का वर्णन हो या , देश प्रेम का उदघोष इसका विवेचन करते समय शब्द एवं स्वर का प्रयोग जनमानस पर अधिक प्रभाव करता दिखाई देता है । भारतीय संगीत विदोंने सांगीतिक माध्यम से एकता की भावनाही जागृत नही की अपितु एक संगीत प्रणाली का विकास भी करते चले गये । देश के अनेक क्रांतीकारी शहीद उत्तम साहित्यकार थे ।परंतु हमारा दुर्भाग्य है कि अनेक गीतोंके रचयिता के नाम तक हमे मालूम नही इनमे हसरत सोहनी, सरदार नव बहार सिंह ,साबिर टोहानी , कुंवर प्रतापचंद्र आजाद , टिकाराम सुखन , ब्रजनारायण चकवस्त आदीयों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । राष्ट्रीय चेतना का मंत्र फुकणे वाले इनके अनेक राष्ट्रीय गीतो से निसंदेह राष्ट्रीय एकता बढती है । भारत एक ऐसा देश है जहा अनेक जाती , धर्म के लोग है इस भिन्नता के बावजूद संगीतकला का प्रवाह आज भी रुका नही है ,और वैसेभी संगीत का अपना एक विश्व है जहा धर्म , जाती , मजहब के अवरोध भी बह जाते है ।आज भी संगीत माध्यम से राष्ट्रीय एकता बढती है और निरंतर बढती रहेगी ।

संदर्भ -

१) डॉ. सत्या भार्गव , राष्ट्रीय एकता मे संगीत की भूमिका , पृ.क्र.०२ ,१९९ , संजय प्रकाशन , हिंदी संस्करण , १ जानेवारी २०२० ,नई दिल्ली

२) डॉ. नजमा प्रवीण अहमद , हिंदुस्तानी म्युझिक , पृ.क्र.०३

३) सुषमा ,संगीत भाषा एवम राष्ट्रीय एकता : एक अध्ययन , शोध प्रबंध , कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र

४) उशा मलीक ,राष्ट्रीय एकता के संदर्भ मे भारतीय लोकसंगीत की भुमिका , शोधप्रबंध , कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र

५) कमलेश शर्मा , उत्तर भारत की राष्ट्रीय एकता मेंा भक्ती संगीत का योगदान ,लघुशोध प्रबंध , दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

६) डॉ. मुरारी शर्मा ,राष्ट्रीय एकता मे संगीत का स्वरूप , पृ क्र.- ५० ,संगीत अंक मे - १९८८ , प्रकाशन स्थान संगीत कार्यालय हाथरस ,२०४१०१

७) योगेशचन्द्र शर्मा ,गितों मे भी अंकित किया था अंग्रेजो , को पृ. क्र. २६ , संगीत अंक ऑगस्ट - १९९३, प्रकाशन स्थान संगीत कार्यालय हाथरस , २०४१०१

८) प्रा डॉ अर्चना देशपांडे, संगीत आणि राष्ट्रीय एकता, ऑनलाइन लेक्चर ,क्रमांक-8 नैतिक मूल्य संवर्धन प्रमाणपत्र अभ्यासक्रम , लोकनायक बापुजी अणे महिला महाविद्यालय यवतमाळ , http://youtu.be/12ptUQj5Uts

९) https://www.livehindustan.com